"खेल में हमारा हाल"

बबली (दिल्ली)

मुझे बार-बार लिखने के लिए कहा जाता है-पढ़ी लिखी मैं जरूर हूं-पर ज्ञान इलम की बातें मुझे आती ही नहीं-और न ही गूढ़ हिन्दी में कुछ लिख सकती हूं-बस सीधी साधी टूटी फूटी भाषा में ही लिख पाती हूं-दिमाग में कुछ भी नहीं है लिखने को दिमाग सोच में पड़ा हुआ है कौन सा विषय लेकर लिखा जाए-

परमधाम से हम रूहें इस फानी दुनियाँ में इश्क और साहिबी अपने पिया को देखने आई हैं और हमने नासूत के तन धारण किए हुए है-आज हम सबका इस खेल में बहुत बुरा हाल है-हम सुन्दर साथ से एक दिली का जो प्यार होना चाहिए वह नहीं है-हम सबके दिलों में-मैं अहंकार-ईर्ष्या-गुस्सा-नफरत कूट-कूट कर भरा हुआ है-हम सब शामिल है इसमें-आज हमारे घरों में होते हैं छोटे-छोटे झगड़े-पति पत्नी का झगड़ा भाई-बहन का झगड़ा-सास-बहू का झगड़ा-सुबह का झगड़ा शाम तक भूल कर हम फिर वैसे के वैसे खून के नातों में प्यार में ऐसे बंध जाते है जैसे कुछ कभी हुआ ही न हो-पर सुन्दर साथ में अगर आपस में झगड़ा किसी छोटी बात पर हो जाता है तो बस हम अपने दिलों में १०-१० साल तक उसकी बातों को याद रखते है और दिल ही दिल में उसके लिए नफरत सी करते है-छोटी-छोटी बात पर ही हम नाराज हो बैठते है-"वह हमारे घर अखंड पाठ पर नहीं आई-हम क्यों जाए-वह कीर्तन पर नहीं आई-हम क्यों जाए उसके घर-उसने मुझे यह कहा था-उसने वो कहा-ऐसा है-वैसा है"-सब पुरानी बातों के गिले शिकवे-नाराजगी-हम खत्म नहीं कर पाते-आज हमें अपने बच्चों-पति-पत्नी-माँ-बाप-माया से कितना प्यार है-यह माया हमें जान से भी ज्यादा प्यारी है-क्या हमें अपने सुन्दर साथ जान से ज्यादा प्यारे है-नहीं-जो प्यार हमें आपस में होना चाहिए वह नहीं है-हम सबका हाल इस खेल में देख कर हमारे राज श्यामा जी का क्या हाल हो रहा होगा-क्या कभी बैठ कर सोचा है-यह वही जान सकता है जिन्होंने उन्हें रोते हुए देखा है-

हादी मीठे सुकन हक के, कहेगा तुमें रोए-रोए।
तुम भी सुन-सुन रोए सी, पर होश में न आवे कोए॥

हम सबको खून के नातों के साथ कितना प्यार है-हम जानते भी है-यह नाता शरीर से है-झूठा नाता-सब स्वार्थ का नाता-यहाँ कोई किसी का नहीं-हमारे बच्चे हमारे साथ परम धाम तो नहीं जायेंगे-पति-पत्नी भाई-बहन माँ-बाप-सब झूठा नाता-पर हम सबको कितनी प्यारी है माया-

Nijanand App

झूठा सब लगेगा मीठा, झूठा कुटम परिवार।
सुख दुख इनमें झूठी चरचा, हुआ सब झूठे का
विस्तार ।।

जिनके साथ हमारा असल नाता है उनसे हमें प्यार नहीं--हर इन्सान में अच्छाईयाँ और बुराईयाँ दोनों शामिल है--हम सब अपनी बुराईयाँ न देखकर दूसरों की बुराईयाँ देखते है--घर में हम अपने बच्चों के अवगुणों को नहीं देखते--अपने घर की बातों को छुपाते है--कभी अपने बच्चों की बुराई पड़ौसन में जा कर नहीं करते पर कभी कोई गलती से गलत बात--गलत काम कोई सुन्दर साथ कर बैठता है तो बस--बात सुनते ही--चाहे वो बात झूठी ही हो--उस साथ की बुराई जब तक हम सारे समाज में नहीं कर लेते हमें चैन नहीं--ऐसा क्यों होता है और फिर उस बात को खत्म नहीं करते और जब भी चार सुन्दर साथ मिलते है--वाणी की अच्छी बातें करने की बजाय हम बस बुराईयाँ करने में जुड़े रहते है--क्या हमें ऐसा करना चाहिए--मान लो हमारे साथ किसी ने बुरा किया है--तो क्या हमारे दिल में बदले की भावना होनी चाहिए--नहीं--हमें हमेशा अच्छा ही सोचना चाहिए--हो भला सबका--वाणी में लिखा है--

कोई देत कसाला तुमको, तुम भला चाहियो तिन
सूरत धाम की न छोड़ियो, सुरत पीछे फिराओ
जिन

कभी-कभी सोचती हूं तो बड़ा अजीब सा लगता है--कहा हम परम धाम में नूरी तनो में आपस में बाहों में बाहें डाल कर मूल मिलावे में बैठे है--कहा हम यहाँ नासूत के तनों में जुदा-जुदा-जुदा-जुदा स्वभाव--आपस में ईर्ष्या-बैर-झगड़े--छोटी-छोटी बातें--झूटा नाम--झूठी कहानियाँ गिले--शिकवे--नाराजगी--कहाँ गया हमारा प्यार सच में--हम सब में एक दिली का जो प्यार होना चाहिए वो नहीं है--हम कितनी वाणी पढ़ते है--चर्चा सुनते है--दिल हमारे साफ होने के बजाय मैले ही होते रहे है सुन-सुन कर हमारे दिल पत्थर हो गए है-अमल का तो नामों निशान नहीं हम है मोमिन--ब्रह्मसृष्ट--हाँ है पक्का--क्योंकि हमारी चाल--हमारा व्यवहार इतना गन्दा है कि हमें अपने ऊपर शरम आनी चाहिए--हमारे दिल ने झुकना तो सीखा ही नहीं--हमारी गर्दन ने तो हमेशा अकड़ कर ही चलना है--सुन्दर साथ में रहना तो फिर मान शान कैसी--नहीं गलती की हमने तो भी मान लेना--माफी माँगना--झुकना--दिल को झुकाना ही ठीक होता है--वाणी में लिखा है--

अब जो घड़ी रहो साथ चरणे, होय रहयो तुम
रनू समान ।
इत जागे को फल एही है, चेत लीजो कोई चतुर
सुजान ।।

यहाँ सब अपनी तारीफ चाहते है--इज्जत चाहते है और जीतना चाहते है--कोई हार कर खुश नहीं--कोई अपनी बुराई सुनकर खुश नहीं--अपनी बेइज्जती कौन चाहेगा--जीतने वाले में मैं--अहंकार आ जाता है--हारने वाले में ईर्ष्या और गुस्से में जीतने वाले को बुरा-भला कुछ भी कह सकता है--जो मजा खुशी से हारने में है वह मजा जीतने में नहीं- हार जीत होती है हुकम से--

हुकम उठावे हंसते, रोते उठावे हुकम ।
हार जीत दुख हुकमें, कछू न बिना हुकम खसम ।।

(शेष पृष्ठ २७ पर)

Nijanand App

में और अपने आपको मिटा डालते हैं।

हम भी उन सुन्दर साथ की भाँति ही राजी के अंग है। तो क्यों हम अपने स्वांसों को खोरते हैं जैसे कि वाणी में भी लिखा है।

स्वांस स्वांस निज नाम जपों, वृथा स्वांस मत खोय
न जानो इन श्वांस को, आवन होय न होय

इस तरह हमें अपने श्वासों को खोना नहीं है। बल्कि उससे हमें आगे की कमाई करनी है। कीरंतन में भी देह की तरफ के जबाब से ये ही बात स्पष्ट है कि देह कहती है कि मैं तो मिट्टी हूं मिट्टी में मिल जाऊंगी इसलिए इस देह के रहते हुए इससे क्यों न वह अखण्ड सुख की प्राप्ति कर लें अन्यथा इसका अन्त तो बाकी दुनियाँ वालों की तरह होना ही है। इसीलिए जितने समय के लिए हमें ये तन मिला है क्यों न इसे धनी के चरणों के ऊपर मिटा दें या समर्पित कर दें ताकि इस तन के छोड़ने के बाद दुनियाँ वाले भी वाह-वाह करें व आगे धनी भी शाबाशी दें जैसा कि वाणी में भी लिखा है।

इत भी हुइया धन-धन, धाम धनी भी कहे धन-धन

हम इस दुनियाँ को देखने के लिए अवश्य आए हैं लेकिन इसमें मरने के लिए नहीं आए हमें मरना है तो धनी के चरणों पर और अपने आपको जीते जी भी मारना है जो कोई भी नहीं मर सकता अर्थात हमें अपनी में खुदी को समाप्त कर धनी की में को अपने दिल में बसाना है और ऐसे सुन्दर साथ ही मर कर भी कभी नहीं मरते है। जैसा कि स्वामी जी ने भी फरमाया है।

जो पहले आप मुरदे हुए, दुनी करो मुरदार
हक तरफ जोबते हुए, उड़ पहुंचे नूर के पार

जब हमें एक न एक दिन अवश्य मरना ही है। तो हम दुनियाँ की मौत न मरकर मोमिन की मौत क्यों न मरें, वैसे भी यदि हम यहाँ मर भी गए तो क्या फर्क पड़ता है। धनी के चरणों में तो हमारा तन अखण्ड है ही जिनका कभी अन्त व नाश नहीं होता है। इसलिए हमारी जो सुरता इस खेल को देखने आई है उसे हमने परमधाम में अपने तन में उठाना है ताकि हम दुनियाँ को मुरदार कर सकें, और अपने आपको धनी के चरणों में समर्पित करें।

(शेष पृष्ठ २४ का)

"खेल में हमारा हाल"

जो कुछ भी हम कर रहे हैं राज श्याम जी देख रहे हैं–वह १२००० रूहों के सिर पर खड़े है–कौन क्या कर रहा है--सब निहार रहे हैं–हम झूठ बोलें--कोई पाप–कोई गुनाह करें--चोरी करें--कोई भी गलत काम करे--किसी की बुराई करें-किसी पर हंसे-किसी का मजाक उड़ाएं--किसी का दिल दुखाएं--जो कुछ भी कर रहे हैं--वह देख रहे हैं--

खुदा देखता है सबन, और जानता है सबन के मन

अन्त में मैं यही कहूंगी–छोटी-छोटा बातों को दिलों से भूला देना चाहिए--आपस में सबसे प्यार करना चाहिए--बाइबिल में भी लिखा है--जो मेरे बन्दों से प्यार करेगा–खुदा उसको प्यार करेगा--आपस में झगड़ा-ईर्ष्या–मैं अहंकार–गिला–शिकवा नाराजगी-सुन्दरसाथ में विरोध देख कर राजश्यामा जी का दिल कितना दुखता होगा–यह वाणी से ही पता चलता है--

ज्यों-ज्यों साथ में होत है प्रीत, त्यों-त्यों मोही को होत है सुख।
ज्यों-ज्यों द्रोह करत हैं साथ में, अन्त वाही को है जो दुख॥

अगर आप सब अपने पिया को खुश देखना चाहते हो तो बस अपने दिल में सब साथ के लिए प्यार भर लो।

Nijanand App